Tehqeeqi Pamphlet No. 7

# ग़ैरे सहाबा में तरदी

गैरे सहाबा के लिए रदि अल्लाहू तआला अन्हू
का इस्तेमाल करने की शरई हैसियत


عبد مصطفی
AM ABDE MUSTAFA

# ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official




ABDE MUSTAFA OFFICIAL

abdemustafaofficial.blogspot.com

# ग़ैर सहाबी के लिये रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु का इस्तिमाल

कहा जाता है कि सिर्फ़ सहाबा -ए- किराम के नाम के साथ "रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु" का इस्तिमाल करना चाहिये और किसी के लिये ये कलिमात इस्तिमाल करना जाइज़ नहीं, ये बात आवाम में तो मशहूर है ही, साथ ही साथ बदमज़हबों की तरफ़ से भी इसे बतौर एतराज़ पेश किया जाता है, दुरुस्त ये है कि सहाबा -ए- किराम के अलावा भी इन कलिमात का इस्तिमाल किया जा सकता है और इसे साबित करने के लिये हमारे पास कई दलाइल हैं। इस रिसाले में इस मस'अ़ले पर तफ़सीली कलाम किया गया है, हम ने कई उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ात को इस में जमा किया है जिन के मुताले के बाद क़ारिईन पर ये मसअ़ला बिल्कुल वाज़ेह हो जायेगा।

अल्लाह त'आला इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓىٕكَ هُمْ خَیْرُ الْبَرِیَّةِ(۷) جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّهٗ(۸) (سورة البينة، 7، 8)

"बेशक जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये वही तमाम मख्लूक़ में सब से बेहतर हैं, उन का सिला उन के रब के पास बाग़ात (जन्नत में) हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वो उस से राज़ी हुये, ये सिला उस के लिये है जो अपने रब से डरे।"

खाज़िन में है: अल्लाह अज़्ज़वजल उन की इताअ़त और इख्लास से राज़ी हुआ और वो उस के करम और उस की अ़ता से राज़ी हुये, ये अ़ज़ीम बशारत उस के लिये है जो दुनिया में अपने रब से डरे और उस की नाफ़रमानी से बचे।

(خازن، البینۃ، تحت الآیۃ:۸، ملتقطاً)

तफ़सीरे सिरातुल जिनान में है : हर वली और बुज़ुर्ग को "रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु" कह सकते हैं, ये लफ्ज़ सहाबा -ए- किराम के साथ खास नहीं। इस आयत में ये मज़मून साफ़ मौजूद है।

(تفسیر صراط الجنان، تحت الآیۃ ھذا)

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं कि रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु सहाबा -ए- किराम रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हुम को तो कहा ही जायेगा, आइम्मा व औलिया व उलमा -ए- दीन को भी कह सकते हैं। किताबे मुस्तताब बहजतुल असरार शरीफ़ व जुमला तसानीफ़ आरिफ़ बिल्लाह सैय्यिद अ़ब्दुल वहाब शारानी वग़ैरह अकाबिर में शाय'अ़ व ज़ाय'अ़ है। तनवीरुल अब्सार में है :

يستحب الترضی للصحابة والترحم للتابعين ومن بعدهم من العلماء والاخيار وكذا يجوز عكسه على الراجح

(درمختار شرح تنویر الابصار مسائل شتی، مطبع مجتبائی دہلی،2/350)

"सहाबा -ए- किराम के अस्मा -ए- गिरामी के साथ "रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु" कहना या लिखना मुस्तहब है। ताबईन और बाद वाले उलमा -ए- किराम और शुरफ़ा के लिये "रहमतुल्लाह त'आला अ़लैह" कहना या लिखना मुस्तहब है और इस का उलट भी राजेअ़ क़ौल की बिना पर जाइज़ है यानी सहाबा -ए- किराम के साथ रहमतुल्लाह त'आला अ़लैह और दूसरों के साथ "रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु"।

(فتاوی رضویہ،ج23،ص388)

हज़रत अल्लामा मुफ्ती अमजद अ़ली आज़मी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि बुज़ुर्गाने दीन के नाम के साथ "रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु" कहना और लिखना जाइज़ है। सहाबा -ए- किराम रिदवानल्लाहि अलैहिम अजमईन के साथ इस की खुसूसियात साबित नहीं, क़ुरआने मजीद में सहाबा -ए- किराम और उन के मुत्तबईन सब के लिये फ़रमाया गया रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हुम।

قالا الله تعالی والسبقون الاولون من.....الآیت

साहिबे हिदाया के तलामिज़ा ने जहाँ उन का खास क़ौल "हिदाया" में ज़िक्र किया यूँ कहा

"قالا رضی الله عنه"

यानी मुसन्निफ़ रदिअल्लाहु अ़न्हु ने ये फ़रमाया और दीगर कुतुब में अक्सर जगह आइम्मा के अस्मा के साथ तर्दी मक्तूब व मज़्कूर है।

(فتاوی امجدیہ،ج4،ص345)

अल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि "रदिअल्लाहु अ़न्हु" का दुआईया जुमला सहाबा -ए- किराम के साथ खास नहीं, गैरे सहाबा के नाम के साथ भी इस का इस्तिमाल जाइज़ है। इसी लिये बुज़ुर्गों ने बड़े-बड़े उलमा व मशाइख के लिये भी इस को इस्तिमाल फ़रमाया है जैसा कि हज़रत शैख अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस द्हेलवी रहमतुल्लाह त'आला अ़लैह ने अशअ़तुल लमआत, जिल्द चहारुम, सफ़हा 743 पर हज़रते उवैसे क़रनी को रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखा और अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाह अ़लैह ने रद्दुल मुहतार, जिल्द अव्वल, मतबूआ देवबन्द सफ़हात 35, 36, 37 और सफ़हा 42 पर हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखा और मिश्कात के मुसन्निफ़ हज़रते शैख वलीउद्दीन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह खतीबे तबरेजी ने मिश्कात शरीफ़ के मुक़द्दमा, सफ़हा 11 पर साहिबे मसाबीह अल्लामा अबू मुहम्मद बिन मसऊद फरार बगवी को रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखा और अल्लामा शहाबुद्दीन खफ़ाजी ने नसीमुर रियाज़ जिल्द अव्वल सफ़हा 5 पर अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ को रदिअल्लाहु अ़न्हु लिखा और हज़रते गौसे पाक रदिअल्लाहु अ़न्हु के नाम के साथ कई जगह दुआईया जुमला लिखा जब कि इन में से कोई सहाबी नहीं तो मालूम हुआ कि गैरे सहाबी के नाम के साथ रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखना और कहना जाइज़ है। यहाँ तक कि आम देवबन्दी वहाबी जो रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु को सहाबी के साथ खास समझते हैं और गैरे सहाबी को रदिअल्लाहु अ़न्हु कहने पर लड़ पड़ते हैं, उन के पेशवा मौलवी क़ासिम और मौलवी रशीद अहमद गंगोही को भी रदिअल्लाहु अ़न्हु लिखा गया है जैसा कि तज़्किरतुर रशीद, जिल्द अव्वल, सफ़हा 28 पर है, मौलाना क़ासिम साहिब मौलाना रशीद अहमद साहिब रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हुम.........अलख।

इन तमाम हवाला जात से रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गया कि गैरे सहाबी के नाम के साथ रदिअल्लाहु अ़न्हु कहना जाइज़ है।

(فتاوی فیض الرسول، ج2، ص541)

आप एक जगह और लिखते हैं कि गैरे सहाबी के लिये रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु का इस्तिमाल करना जाइज़ है, जैसा कि दुर्रे मुख्तार मअ़ शामी, जिल्द पंजुम, सफ़हा 470 में है :

يستحب الترضی للصحابة والترحم للتابعین ومن بعدھم من العلماء والاخیار وکذا یجوز عکسه علی الراجح

(درمختار شرح تنویر الابصار مسائل شتی، مطبع مجتبائی دہلی،2/350)

"सहाबा -ए- किराम के अस्मा -ए- गिरामी के साथ "रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु" कहना या लिखना मुस्तहब है। ताबईन और बाद वाले उलमा -ए- किराम और शुरफ़ा के लिये "रहमतुल्लाह त'आला अ़लैह" कहना या लिखना मुस्तहब है और इस का उलट भी राजेअ़ क़ौल की बिना पर जाइज़ है यानी सहाबा -ए- किराम के साथ रहमतुल्लाह त'आला अ़लैह और दूसरों के साथ रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु।
हज़रत अल्लामा अहमद शहाबुद्दीन खफ़ाजी रहमतुल्लाह अ़लैह नसीमुर रियाज़, शरह शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ जिल्द सोम, सफ़हा 509 में तहरीर फ़रमाते हैं, अम्बिया -ए- किराम के अलावा आइम्मा वग़ैरह उलमा व मशाइख को गुफ़रान व रज़ा से याद किया जाये और रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु कहा जाये।

(ملخصًا)

फिर अल्लामा जलालुद्दीन अहमद अमजदी ने कई हवाले पेश फ़रमाये हैं जिन से साबित होता है कि रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु का इस्तिमाल सहाबा के साथ खास नहीं है।

(ایضاً، ص426)

الحدیقة الندیة شرح الطریقة المحمدیة

में है : सहाबा -ए- किराम के नामों के साथ रदिअल्लाहु अ़न्हु और ताबईन उज़्ज़ाम, उन के बाद वाले उलमा -ए- किराम, इबादत गुज़ारों और तमाम औलिया -ए- किराम के नामों के साथ रहमतुल्लाह अ़लैह कहना मुस्तहब है।
सवाल : क्या इस के बरअक्स भी हो सकता है? यानी औलिया व उलमा के लिये रदिअल्लाहु अ़न्हु और सहाबा -ए- किराम के लिये रहमतुल्लाह अ़लैह कह सकते हैं?

जवाब : बाज़ उलमा -ए- किराम रहीमहुमुल्लाहु त'आला फ़रमाते हैं "ऐसा करना जाइज़ नहीं बल्कि रदिअल्लाहु अ़न्हु सहाबा -ए- किराम के साथ खास है और उन के अलावा बाक़ी सब के साथ रहमतुल्लाह अ़लैह कहा जायेगा जब कि हज़रते सैय्यिदुना इमाम नौवी अ़लैहिर्रहमा (मुतवफ्फ़ा 554 हिजरी) फरमाते हैं : "यह सहीह नहीं, बल्कि सहीह वही है जो जम्हूर उलमा -ए- किराम रहीमहुमुल्लाहु त'आला का मौक़िफ़ है कि ऐसा कहना मुस्तहब है और इस के बेशुमार दलाइल हैं।

(الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ، اردو ترجمہ بنام اصلاح اعمال، ص99)

अल्लामा मुफ्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं :
फ़तावा की मशहूर किताब दुर्रे मुख्तार में इसे जाइज़ लिखा गया है, अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ ने आइम्मा, ताबईन व उलमा वग़ैरह के साथ रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु के इस्तिमाल को जाइज़ लिखा है, इमाम नौवी ने इमाम बुखारी व मुस्लिम को रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखा है

(شرح مسلم)

मिश्कात में साहिबे मसाबीह को रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखा गया है, उलमा -ए- तफ़सीर में इमाम तबरी व इमाम नस्फ़ी दोनों के लिये रहमतुल्लाह अ़लैह और रदिअल्लाहु अ़न्हु लिखा हुआ मिलेगा, अगर ढूंढा जाये तो ऐसे नामों की लाईन लग जायेगी, सूफिया -ए- किराम के तज़्किरा में ये कसरत से मिलता है और देवबन्दियों ने भी अपने अकाबिरीन के लिये कई मक़ामात पर यह कलिमात इस्तिमाल किये हैं।

(ملخصاً: فتاوی بحر العلوم، ج1، ص124)

एक और मक़ाम पर आप लिखते हैं कि अल्लाह त'आला के तमाम नेक बन्दों के साथ रहमतुल्लाह अ़लैह और रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखा जा सकता है और क़ुरआने पाक की आयत से यही मालूम होता है (फ़िर आप ने सूरह अल- बय्यिनह की वही आयात लिखी है जिन्हें हम नक़्ल कर चुके हैं)

(ایضاً، ج5، ص335)

अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी अ़लैहिर्रहमा लिखते हैं कि सहाबा -ए- किराम के अलावा दीगर मशाइख व उलमा को रदिअल्लाहु अ़न्हु कहना सलफ़ और खलफ़ से चला आ रहा है, और इस का जवाब क़ुरआन मजीद से माखूज़ है। सूरह तौबा में फ़रमाया :

"और सब में अगले और पहले मुहाजिर और अंसार जो भलाई के साथ उन के पैरो हुये, अल्लाह उन से राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी हो गये।

इस आयत में मुहाजिरीन व अन्सार के साथ-साथ भलाई के साथ क़ियामत तक उन के मुत्तबईन के लिये फरमाया और दूसरी आयत में मुत्लक़न हर नेक वा सॉलेह मोमिन के लिये फ़रमाया इस लिये जो ये कहता है कि रदिअल्लाहु अ़न्हु का सीगा सहाबा -ए- किराम के साथ खास है वो क़ुरआन मजीद के खिलाफ़ कह रहा है।

मज़हबी किताबों के मुताले से ये ज़ाहिर है कि आइम्मा -ए- अअ़लाम, मशाइखे उज़्ज़ाम ने सैकड़ों गैरे सहाबी, उलमा व मशाइख के लिये रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु इस्तिमाल फ़रमाया है। अगर खाली उन सब को नाम लेकर जमा किया जाये तो कम अज़ कम सौ सफ़हे की किताब तैय्यार हो जाये। (फ़िर आप ने साइल की तस्कीन के लिये चंद हवाला जात पेश फ़रमाये हैं।)

(فتاوی شارح بخاری، ج1، ص609)

एक और सवाल के जवाब में लिखते हैं कि रदिअल्लाहु अ़न्हु सहाबा -ए- किराम के लिये खास नहीं बल्कि उम्मत के जमीअ़ सुलहा के लिये हमेशा से इस्तिमाल होता आया है। खुद क़ुरआन में मुतअ़द्दद जगह सुलहाए उम्मत के लिये ये सीगा वारिद है।

(فتاوی شارح بخاری، ج3، ص453)

अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद फज़्ले करीम रज़वी लिखते हैं कि इमाम मुहक़्क़िक़ अ़लल इत्लाक़ वग़ैरह अकाबिरीन ने फरमाया है कि :

کل ما کان ادخل فی الادب والجلال کان حسنا

जो बात अदब व ताज़ीम में दखल रखती हो वो अच्छी है। क़ुरआने मजीद में यह सीगा तमाम नेक लोगों के लिये इस्तिमाल हुआ है।

(ملخصًا)

(فتاوی شرعیہ، ج2، ص608)

हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती अजमल क़ादरी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि रदिअल्लाहु अ़न्हु सिर्फ़ सहाबा -ए- किराम के साथ खास नहीं बल्कि ताबईन व तबअ़ ताबईन, आइम्मा व मुज्तहिदीन, फुक़हा व मुहद्दिस, औलिया -ए- किराम व उलमा -ए- आअ़लाम के लिये भी जाइज़ बल्कि मशाइख का मअ़मूल है जैसा कि तनवीरुल अब्सार व दुर्रे मुख्तार में इस तरह की तसरीह है।

(ملخصًا)

(فتاوی اجملیہ، ج3، ص391)

अ़ल्लामा मुफ्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादरी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि क़ुरआने करीम में है :
"और जो भलाई के साथ उन के पैरो हुये, अल्लाह त'आला उन से राज़ी हुआ और वो अल्लाह त'आला से राज़ी हुये।"
यह जुम्ला जब किसी मुसलमान के लिये बोला जाता है तो मक़सूदे दुआ होता है, लिहाज़ा मुसलमान के लिये यह जुम्ला दुआ के तौर पर इस्तिमाल करने में कोई हर्ज नहीं। दुर्रे मुख्तार में इसे जाइज़ लिखा गया है।

(وقار الفتاوی، ج1، ص346)

अ़ल्लामा मुफ्ती मुहम्मद खलील खान बरकाती लिखते हैं कि अस्सलातु वस्सलाम अलफाज़ बिला शुब्हा हज़राते अम्बिया -ए- किराम के साथ मख्सूस है। बाक़ी अल्फाज़ ना सहाबा के साथ मख्सूस हैं और ना औलिया -ए- किराम के साथ ब-सूरते दुआ व बा-निय्यते इंशा, रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु हज़राते औलिया -ए- किराम, उलमा -ए- उज़्ज़ाम के साथ भी बोला जाता है, जैसा कि रहमतुल्लाह अ़लैह औलिया व उलमा दोनों पर अलबत्ता रहमतुल्लाह अ़लैह का लफ्ज़ सहाबा -ए- किराम के नामों के साथ मस्मूअ़ नहीं और ना मअ़मूल है।

(فتاوی خلیلیہ، ج1، ص95)

एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि रदिअल्लाहु अ़न्हु सहाबा के साथ खास नहीं है बल्कि बुज़ुर्गाने मिल्लत के लिये भी इस्तिमाल होता चला आ रहा है जैसा कि मिश्कात में साहिबे मसाबीह को रदिअल्लाहु अ़न्हु लिखा गया है और भी कई मिसालें मौजूद हैं (फिर आप ने हवाला जात नक़्ल किये हैं।)

(ملخصاً)

(ایضاً، ص134)

मौलाना मुहम्मद अजमल अ़त्तारी ने अपनी किताब इमामुल औलिया में छह सफ़हात पर मुश्तमिल एक तहरीर लिखी है जिस में कई दलाइल और हवाला जात पेश किये हैं जिन से साबित होता है कि इस का इस्तिमाल सहाबा -ए- किराम के साथ खास नहीं बल्कि औलिया व उलमा के लिये भी इस का इस्तिमाल जाइज़ है।

(امام الاولیاء، ص29تا34)

अ़ल्लामा प्रोफेसर मुफ्ती मुनीबुर रहमान लिखते हैं कि उर्फ़े आम में चूँकि सहाबा -ए- किराम के इस्मे गिरामी के साथ रदिअल्लाहु अ़न्हु बोला और लिखा जाता है बल्कि तक़रीबन उस का इल्तिज़ाम किया जाता है, इसलिये ये समझ लिया गया है कि शायद ये सहाबा -ए- किराम का लक़बे खास है लेकिन यह नज़रिया दुरुस्त नहीं है, क्योंकि क़ुरआन मजीद में इस का इतलाक़ मुअ़मिनीन सॉलिहीन के लिये आम है। (फिर आप ने आयात व दीगर हवाला जात से इसे साबित किया है।)

(تفہیم المسائل، ج3، ص32تا36)

फ़तावा मरकज़ी तरबियत इफ्ता में है कि बुज़ुर्गाने दीन के नाम के साथ रदिअल्लाहु अ़न्हु लिखना जाइज़ है। सहाबा के साथ इस की खुसूसियत साबित नहीं है बल्कि क़ुरआन में सहाबा और उन के मुत्तबईन के लिये इस्तिमाल किया गया है।

(فتاوی مرکز تربیت افتا، ج2، ص651)

हज़रत अ़ल्लामा फैज़ अहमद उवैसी रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं कि रदिअल्लाहु अ़न्हु का इस्तिमाल सहाबा के साथ खास नहीं लिहाज़ा गैरे सहाबा के लिये भी जाइज़

है। (फिर आप ने दुर्रे मुख्तार, शामी, नसीमुर रियाज़ और भी कुछ हवाला जात दिये हैं।)

(فتاوی اویسیہ، ص402)

ताजुश्शरिया, अ़ल्लामा मुफ्ती अख्तर रज़ा खान रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं कि तर्दी जिस तरह सहाबा के लिये जाइज़ है इसी तरह ग़ैरे सहाबा के लिये भी रवा है। इस के जवाज़ की दुर्रे मुख्तार वग़ैरह मुअ़तमद कुतुब में तसरीह है और क़ुरआन मजीद में अ़लल उमूम सब के लिये मुस्तअ़मल है।

(فتاوی تاج الشریعہ، ج1، ص425)

एक और सवाल के जवाब में आप ने तफ़सील से इस सवाल की तहक़ीक़ पेश फ़रमाई है और कई हवालों से इसे साबित किया है कि सहाबा के साथ खास नहीं है।

(ایضاً، ص471)

एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि ये सहाबा के साथ खास नहीं, ग़ैरे सहाबा के लिये भी कह सकते हैं।

(فتاوی تاج الشریعہ، ج2، ص602)

अ़ल्लामा गुलाम रसूल सईदी रहमतुल्लाह लिखते हैं कि इस का इस्तिमाल सहाबा के साथ खास नहीं है फिर आयात लिखने के बाद इमाम नौवी का क़ौल नक़्ल करते हैं कि तमाम उलमा -ए- दीन और सॉलिहीन के लिये रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु और रहमतुल्लाह अ़लैह कहना और लिखना चाहिये।

(شرح مسلم للنووی)

इमाम राज़ी जहाँ आइम्मा -ए- मुज्तहिदीन का ज़िक्र करते हैं वहाँ रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखते हैं मस्लन इमाम अबू हनीफ़ा रदिअल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया।

(تفسیر کبیر)

(شرح مسلم للسعیدی، ج1، ص277)

ये कुछ हवाला जात थे जो हम ने कुतुबे अहले सुन्नत से पेश किये वरना फ़िरक़ा -ए- बातिला की किताबों में कसरत से इस का इस्तिमाल मिलता है कि वो अपने अकाबिरीन के लिये रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु लिखते हैं और उन की आवाम अहले सुन्नत पर एतराज़ करती है। अगर तमाम हवाला जात को जमअ़ किया जाये तो बक़ौल अ़ल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी "एक सौ सफ़हात से ज़्यादा की किताब बन जायेगी" और हम ने इसे एक मुख्तसर रिसाले की शक़्ल देने के लिये कई हवाला जात को तफ़सीलन नक़्ल नहीं किया और इबारात भी मुकम्मल नक़्ल नहीं की गई हैं बल्कि खुलासा लिखने पर इक्तिफा किया गया है।

इस रिसाले में जितने हवाले जात नक़्ल किये हैं, इनसे ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि गैरे सहाबा के लिये रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु का इस्तिमाल ना सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि सलफ़ व खलफ़ में राइज और कुतुब में मज़्कूर है। इस की तख्सीस सहाबा -ए- किराम के साथ साबित नहीं बल्कि आयाते क़ुरआनी से भी यही माखूज़ है कि ये मुत्तबईने सहाबा, सॉलिहीन व बुज़ुर्गाने दीन के लिये भी इस्तिमाल किया जा सकता है।




अ़ब्दे मुस्तफ़ा

# OUR OTHER PAMPHLETS

























